होमियोपैथी -एक परिचय

होम्योपैथिक विभाग
ई एस आई अस्पताल रोहिणी सेक्टर -15 दिल्ली

डॉ .गुलशन वर्मा

प्राक्कथन

इस संकलित पुस्तिका का उद्देश्य जनसाधारण को होम्योपैथीक चिकित्सा के बारे में अवगत कराना है ।यहां संक्षेप में होम्योपैथी के सिद्धांतो एवं साधारण जानकारियों को जनसाधारण के लिए प्रस्तुत किया गया है।

डॉ . गुलशन वर्मा

कर्मचारी राज्य बीमा निगम अस्पताल रोहिणी अपनी पुस्तिका 'होम्योपैथी एक परिचय' का प्रकाशन करने जा रहा है। यह होम्योपैथी चिकित्सा सुविधाओं की दिशा में बेहतर कदम है और जन साधारण के लिए बहुत ही उपयोगी कदम है। आशा करती हूँ कि आगे भी इस तरह के प्रयास जारी रहेंगे।

डॉ. रचिता बिस्वास
चिकित्सा अधीक्षक

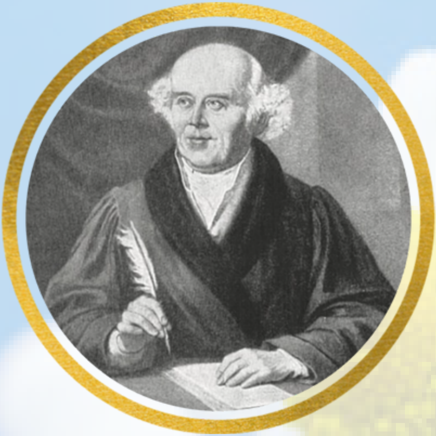

क्रिश्चियन फ्राइडरिक सैम्यूल हानेमान
(10 अप्रैल 1755-2 जुलाई 1843)
(होम्योपैथी के जनक)

होम्योपैथी एक जर्मन चिकित्सा पद्धति है| जिसमे रोगी का इलाज 'समानता के सिंद्धात' पर आधारित है| जिसके अनुसार औषधियाँ उन रोगों से मिलते जुलते रोग दूर करती हैं, जिन्हें वे उत्पन्न करती हैं।

व्यक्तिपरक और संपूर्ण चिकित्सा

-

होम्योपैथी केवल रोगों के नाम पर चिकित्सा नहीं करती। वास्तव में यह रोग से ग्रसित व्यक्ति के मानसिक, भावनात्मक तथा शारीरिक आदि सभी पहलूहों की चिकित्सा करती है। एक ही बीमारी अथवा संपूर्ण लक्षण के आधार पर अलग-अलग औषधियाँ निर्धारित की जा सकती हैं।

भारत में होम्योपैथी

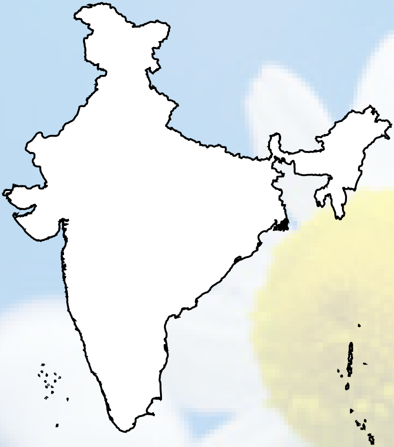

भारत में होम्योपैथी की शुरुआत कोलकत्ता में लगभग दो सौ साल पहले की गयी थी, आज यह भारत की स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। भारत सरकार ने होम्योपैथी और अन्य 'आयुष' चिकित्सा पद्धति के विकास एवं प्रगति के लिए निरंतर प्रयास किए हैं। सरकार के निरंतर प्रयासों के कारण, केन्द्र और सभी राज्यों में होम्योपैथी का एक संस्थागत ढांचा स्थापित हुआ है। कर्मचारी राज्य बीमा निगम ने अपने अथक प्रयासों से समस्त भारत में 'आयुष' चिकित्सा पद्धति के विकास के लिए समुचित प्रबंध किया है।दिल्ली के सभी इ एस आई अस्पतालों और कुछ औषधालयों में होमियोपैथी की सुविधा उपलब्ध है।

विश्व में होमियोपैथी

वर्तमान में होम्योपैथी को 80 से अधिक देशों में प्रयोग किया जाता है। इसे 42 देशों में अलग औषध-प्रणाली के रूप में कानूनी मान्यता प्राप्त है और 28 देशों में पूरक और वैकल्पिक चिकित्सा के रूप में मान्यता दी गयी है । विश्व स्वास्थ संगठन (डब्ल्यूएचओ) होम्योपैथी को, पारंपरिक और पूरक औषधि के सबसे अधिक इस्तेमाल किये जाने वाली पद्धतियों में से एक पद्धति के रूप में मानता है।

होमियोपैथी विभिन्न रोगो में

होम्योपैथीक चिकित्सा विभिन्न रोगो मे लाभकारी है | जैसे की मानसिक तनाव ,मानसिक रोग ,त्वचा संबंधी रोग , हड्डी -जोड़ संबंधी रोग ,आँख -नाक- कान संबंधी रोग ,महिला संबंधी रोग,पुरुष संबंधी रोग ,प्रजनन संबंधी रोग , नवजात शिशु संबंधी रोग, बाल अवस्था संबंधी रोग, किशोर अवस्था संबंधी रोग ,ऑटोइम्म्यून रोग ,प्रौढ़ अवस्था संबंधी रोग इत्यादि |

होम्योपैथी दवा लेने के कुछ नियम

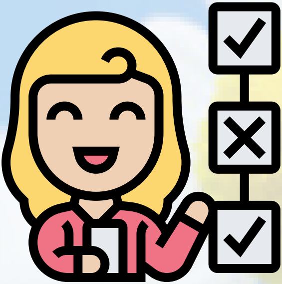

1. दवा लेने के बाद डिब्बी को कभी भी खुला ना छोड़ें।
2. अब होम्योपैथिक उपचार ले रहे हैं तो नशीली वस्तुओं से दूर रहें ।
3. इन दवाओं को कभी भी हाथ में लेकर नहीं खाना चाहिए। होम्योपैथिक दवाओं को ढक्कन की मदद से मुंह डालना चाहिए।
4. दवा लेने के करीब 15 मिनट तक कुछ भी खाएं-पीएं नहीं।
5. होम्योपैथिक गोलियां लेने का सबसे अच्छा तरीका है कि आप उन्हें जीभ के नीचे रखें या चूसें। कभी भी इन्हें पूरी तरह से न निगलें।
6.चिकित्सक की सलाह से ,ही कोई दवा लें।

होमियोपैथी- मिथक और तथ्य

क्या होम्योपैथी का असर धीमे होता है?

होम्योपैथिक दवाओं का असर कई कारकों पर निर्भर करता है। अगर रोग की हाल ही में उत्पत्ति हुई है तो इलाज कम समय में ही पूरा किया जा सकता है। ऐसे में, अगर दवा का चयन, प्रभावशीलता एवं पुनरावृत्ति का समय सही हो तो होम्योपैथिक दवाएं जल्द असर करती हैं।

जीर्ण रोग के मामलों में, रोग का पूरा इलाज होने में अधिक समय लगता है। अगर दवाई का चयन सही हुआ हो तो यह रोग का शमन करने के बजाए उसे स्थायी और पूरी तरह से मिटा देता है जिसके लिए स्वाभाविक तौर पर ज्यादा समय लगता है।

क्या होम्योपैथी द्वारा सभी रोगों का इलाज किया जा सकता है?

चिकित्सा की किसी भी अन्य प्रणाली की तरह, होम्योपैथी की भी अपनी सीमाएँ हैं। होम्योपैथी में विभिन्न प्रकार के रोगों का इलाज किया जा सकता है। सिर्फ ऐसे मामलों के सिवाए जिसमें शल्य-चिकित्सा की आवश्यकता है। इसके अलावा, कुछ तथा-कथित शल्य-चिकित्सीय रोग जैसे कि बढ़े हुए टॉन्सिल, किडनी स्टोन, बवासीर, गर्भाशय के ट्यूमर इत्यादि का भी होम्योपैथी द्वारा इलाज किया जा सकता है।

होमियोपैथी- मिथक और तथ्य

क्या होम्योपैथिक उपचार के लिए प्रयोगशाला में जांच की आवश्यकता है?

हालांकि होम्योपैथिक दवाइयाँ रोगी के लक्षणों के आधार पर निर्धारित की जाती हैं, परंतु रोग के निदान के उद्देश्य से प्रयोगशाला जांच आवश्यक है तथा मामले के सामान्य प्रबंधन (जैसे कि मधुमेह कि स्थिति में शर्करा के सेवन में नियंत्रण, जीवन शैली में परिवर्तन इत्यादि) आवश्यक है। कई रोगो में प्रयोगशाला में जांच के माध्यम से ही दवाइयों का चयन किया जाता है।

क्या होम्योपैथिक दवाइयों के कोई दुष्प्रभाव हैं?

होम्योपैथिक दवाइयाँ शरीर के कुछ निश्चित क्षेत्रों के लिए लक्षित नहीं होती हैं बल्कि दवाई को रोगी के लक्षणों की समग्रता के आधार पर चुना जाता है और यह रोगियों को संपूर्ण रूप से लक्षित करती हैं। इसलिये सामान्यतः होम्योपैथिक इलाज के दुष्प्रभाव नहीं होते।

होमियोपैथी-मिथक और तथ्य

क्या मधुमेह के रोगी ऐसी होम्योपैथिक दवाओं का सेवन कर सकते हैं जिसमें शर्करा होती है?

हाँ, मधुमेह के रोगी शर्करा युक्त होम्योपैथिक दवाओं का सेवन कर सकते हैं क्योंकि इन दवाओं में शर्करा की मात्रा बहुत कम होती है। जरूरत अनुसार, यह दवाइयां जल के साथ भी ली जा सकती हैं।

क्या यह सच है कि होम्योपैथिक इलाज के दौरान चाय, प्याज, लहसुन आदि का सेवन करना मना होता है?

नहीं , होम्योपैथिक इलाज के दौरान प्याज, लहसुन, चाय, कॉफी, पान इत्यादि का सेवन करना मना नहीं है। परंतु ऐसे खाद्य पदार्थ जो किसी विशेष दवा के प्रभाव को रोकते हैं उनसे परहेज़ करना चाहिए। जैसे कि चाय एवं कच्चा प्याज का सेवन थूजा के प्रभाव को रोकता है, कॉफी का सेवन सोरिनम के प्रभाव को रोकता है तथा कपूर का इस्तेमाल विभिन्न होम्योपैथिक दवाओं के प्रभाव को कम करता है या रोकता है। इसलिये इन खाद्य पदार्थों का इस्तेमाल इलाज के दौरान मना किया जाता है जो रोग के आधार पर निर्धारित होता है।

कुछ प्रमाणक

चिकित्सा से पहले

चिकित्सा के बाद

कुछ प्रमाणक

चिकित्सा से पहले

चिकित्सा के बाद

कुछ प्रमाणक

चिकित्सा से पहले

चिकित्सा के बाद